बच्चों की भागीदारी

✍ प्रमोद मैथिल व चंदन यादव

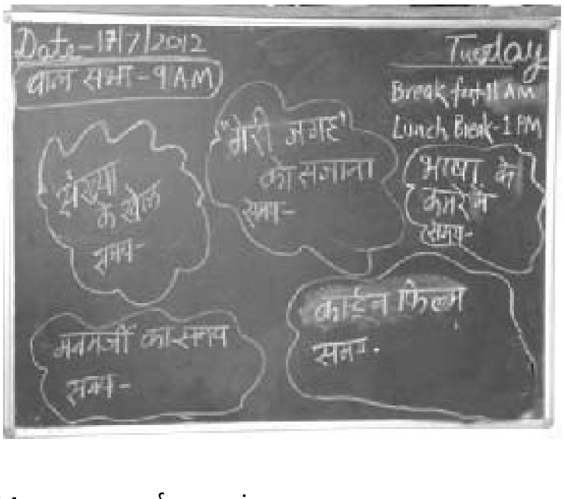
बाल संसद की चर्चा तो बहुत होती है, लेकिन व्यवहारिक रूप में उसके प्रयोग कम देखने को मिलते हैं। वास्तव में स्कूल बनता तो बच्चों से ही है, लेकिन स्कूल की प्रक्रियाओं, गतिविधियों में बच्चों की भागीदारी न के बराबर होती है।

भोपाल में कुछ नवाचारी व्यक्तियों ने एक ऐसे स्कूल की कल्पना की, जिसके संचालन में (अकादमिक और प्रशासनिक दोनों स्तरों पर) बच्चों की भी बराबर की भागीदारी हो। इतना ही नहीं स्कूल के नाम में भी 'लोकतांत्रिक' शब्द जोड़ा गया। खोजा के अंक 8 में इस स्कूल के बारे में विस्तार से चर्चा की गई है। इस लेख में लेखकद्वय उन लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं की चर्चा कर रहे हैं, जिनमें बच्चे भाग लेते हैं। प्रमोद स्कूल के संचालकों में से एक हैं, जबकि चंदन स्कूल के समर्थक हैं।

हिस्सेदारी अकादमिक प्रक्रियाओं में

इस स्कूल में अनेक मान्यताओं को समझने, जांचने और परखने के लिए विविध प्रकार की गतिविधियां और अभ्यास किए जाते हैं। स्कूल में आज क्या किया जाना है, इसका फैसला बच्चे और हम मिलकर करते हैं। इस प्रक्रिया का एक अनुभव कुछ इस तरह रहा।

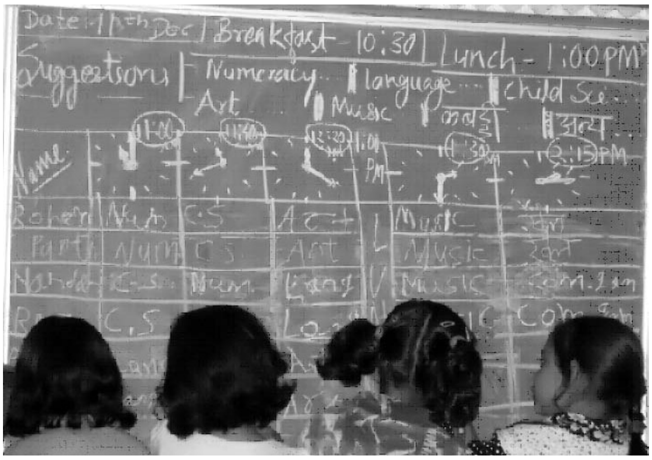
शुरुआत की बातचीत और गाने–बजाने के बाद, पोडियम पर पिछले दिन की शेयरिंग के बाद हमने दिन की प्लानिंग शुरू की। सुझाव के तौर पर बोर्ड पर आज की जाने वाली गतिविधियां लिख रखी थीं। समय के लिए खाली जगह छोड़ दी थी, ताकि उनका कोई समय पहले से हमारी तरफ से तय है ऐसा न लगे।



स्कूल को आरंभ हुए दो माह ही हुए थे। बच्चे बहुत ही कम थे। मैंने (प्रमोद) कहा, चूंकि बच्चों की संख्या कम है, तो हर कमरे में बच्चों की संख्या कम से कम 4 तो जरूर हो। चूंकि बच्चे ठीक से पढ़ना नहीं जानते थे तो मैंने उंगली रख–रखकर, बोर्ड पर लिखा हुआ बच्चों को पढ़कर सुनाया। फिर उनसे पूछा कि वे क्या–क्या और किस क्रम में करना चाहते हैं। सभी ने सबसे पहले 'संख्या के खेल' में जाना तय किया। पर दूसरी गतिविधि के चयन में दुविधा आ गई क्योंकि एक बच्चे को 'भाषा के कमरे' में जाना था और तीन को 'कबाड़ से जुगाड़' (विज्ञान के प्रोजेक्ट) में जाना था। मैंने सुझाया कि अब या तो आप तीन, उस एक बच्चे को मना लो या आप एक, इन तीनों को मना लो। हम भी इसी हिसाब से तैयारी करेंगे। सभी एक–दूसरे को समझाने पहुंच गए। मैं दूर से सबको देख रहा था। मैं दूर था, इसलिए पूरी बात नहीं सुनाई दी। पहले तीन में से एक बच्चा दोनों के बीच डोल रहा था। फिर दो बच्चे जल्दी ही बदल गए और अब

स्थिति उल्टी थी। खैर, थोड़ी मशक्कत के बाद तीसरा भी तैयार हो गया। और अब दूसरी गतिविधि तय हो गई 'भाषा का कमरा'। इसके बाद 'कबाड़ से जुगाड़' और फिर 'मनमर्जी के समय' में कबड्डी खेलना तय किया । 'मेरी जगह' को सजाने के काम को बाद के लिए छोड़ा और यदि समय बचा तो आज कार्टून फिल्म भी देख लेंगे, ऐसा तय किया।

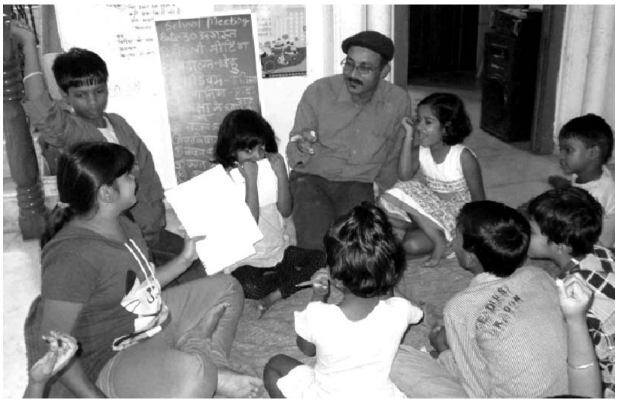
धीरे–धीरे प्लानिंग की यह व्यवस्था विकसित हुई। आज यह स्कूल में प्रतिदिन की महत्त्वपूर्ण गतिविधि है। संख्या अधिक होने पर बच्चे अलग–अलग समूहों में काम करते हैं। वे अपनी रोज की प्लानिंग बोर्ड पर खुद ही करते हैं। बड़े बच्चे यह प्लानिंग अपनी कॉपियों में करते हैं।



इस प्लानिंग की व्यवस्था ने बच्चों की भागीदारी अन्य अकादमिक प्रक्रियाओं में भी बढ़ाई। वे प्लानिंग के समय ही शिक्षक से छानबीन कर लेते कि आज कक्षा में क्या होने वाला है क्योंकि इसी आधार पर वे उसका चयन करेंगे। अतः अलग–अलग थीमेटिक रूम में हम बच्चों के साथ बातचीत करके उस रूम में की जाने वाली गतिविधियां तय करते हैं। इन गतिविधियों को कैसे किया जाना है इस पर भी वे अपने सुझाव शिक्षक को देते हैं।

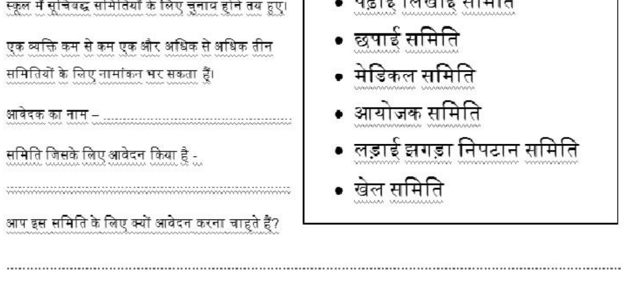
हिस्सेदारी व्यवस्था में

स्कूल की अकादमिक प्रक्रियाओं में बच्चों की भूमिका के बाद हमारा उत्साह बना कि कैसे बच्चे स्कूल की अन्य व्यवस्थाओं में भागीदार बनें। बच्चों के साथ बातचीत करके हमने पिछले सालों में तीन बार स्कूल मीटिंग आयोजित की। हरेक मीटिंग में बच्चों की भागीदारी अच्छी रही। कुछ छोटे–मोटे निष्कर्ष भी निकले। पर मोटे तौर पर कहें तो वे बहुत सफल नहीं रहीं।



हाल ही में जब लोकसभा के चुनाव चल रहे थे, बच्चों के एक समूह ने 'समाज व इतिहास बोध' कमरे में चुनाव प्रक्रिया के बारे में चर्चा की। वहां उन्होंने रुचि दिखाई थी कि वे खुद कैसे चुनाव में भाग ले सकते हैं, तभी स्कूल में चुनाव का विचार उभरा था। हमने सोचा कि बच्चों के पास चुनाव प्रक्रिया के जरिए विभिन्न भूमिकाएं और जिम्मेदारियां आती हैं तो बच्चे ज्यादा उत्साह से स्कूल की प्रक्रियाओं में भाग लेंगे।

स्कूल में विभिन्न कामों के लिए कुछ समितियों की कल्पना की गई है। ये समितियां हैं– व्यवस्था समिति, पढ़ाई–लिखाई समिति, छपाई समिति, मेडिकल समिति, लड़ाई–झगड़ा निपटान समिति, खेल समिति और आयोजन समिति। यह तय किया गया कि हर समिति में कम से कम चार सदस्य होंगे। हर समिति में बच्चों को उनकी क्षमताओं को ध्यान में रखकर मनोनीत किया जाएगा। लेकिन समिति के प्रमुख के लिए चुनाव प्रक्रिया अपनाने के बारे में सोचा गया। हमने इस चर्चा को आगे बढ़ाया और स्कूल में चुनाव



आनंद निकेतन डेमोक्रेटिक स्कूल

समिति प्रमुख चुनाव- नामांकन

स्कूल में सूचिबद्ध समितियों के लिए चुनाव होने तय हुए।

एक व्यक्ति कम से कम एक और अधिक से अधिक तीन समितियों के लिए नामांकन भर सकता हूँ।

आवेदक का नाम – ....

समिति जिसके लिए आवेदन किया है -

....

आप इस समिति के लिए क्यों आवेदन करना चाहते हैं?

....

स्कूल की समितियां

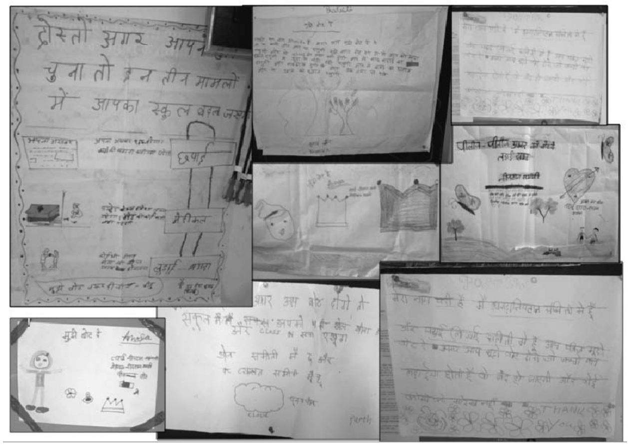
- व्यवस्था समिति
- पढ़ाई लिखाई समिति
- छपाई समिति
- मेडिकल समिति
- आयोजक समिति
- लड़ाई झगड़ा निपटान समिति
- खेल समिति

का प्रस्ताव रखा। चुनाव की प्रक्रिया पूरे महिने भर चली जिसमें बच्चों ने खूब काम किया।

इन चुनावों के लिए वे सारी प्रक्रियाएं की गईं, जो लोकसभा, विधानसभा आदि के चुनावों में होती हैं।

बच्चों के साथ बातचीत करके चुनाव का कार्यक्रम और नियम घोषित किए। मसलन नामांकन के लिए आवेदन, नामांकन वापस लेने की तारीख, प्रचार का समय और तरीके, मतदान और मतगणना की तारीख। उम्मीदवारों के लिए कुछ चुनाव चिह्न तय किए गए। उम्मीदवारों ने इनमें अपनी पसंद के चुनाव चिह्न चुने। एक बच्चा अधिक से अधिक तीन समितियों के लिए चुनाव लड़ सकता था। ज्यादातर उम्मीदवार बच्चों ने दो समितियों के लिए नामांकन भरा। मेडिकल समिति के लिए नामांकन फार्म भरने वाली भूमिका ने नाम वापिस लेने की तिथि के आखिरी दिन अपना नाम वापिस लिया। हरेक समिति के लिए 2 से 3 उम्मीदवार थे। आयोजन समिति के लिए कोई उम्मीदवार नहीं था।

नामांकन फार्म में उम्मीदवार बच्चे को लिखना था कि वह क्यों इस समिति में आना चाहता है। मेडिकल समिति की उम्मीदवार अंबर ने अपने नामांकन फार्म में लिखा कि मैं मेडिकल समिति में इसलिए आना चाहती हूं क्योंकि मुझे लोगों की मदद करना पसंद है। बीहू ने लिखा कि वह बड़ी होकर डॉक्टर बनना चाहती है, इसलिए अभी से प्रेक्टिस करूंगी। लड़ाई–झगड़ा निपटान समिति की उम्मीदवार प्रीति ने लिखा कि किसी की लड़ाई देखकर मुझे अजीब सा लगता



है। इसलिए चुनाव लड़ रही हूं। खेलकूद समिति के उम्मीदवार पार्थ ने लिखा कि मुझे खेल पसंद है और मैं खिलाड़ी बनना चाहता हूं। उम्मीदवार बच्चों ने अपने प्रचार के लिए पोस्टर बनाकर दीवार पर लगाए। उन्होंने इसके लिए सभाएं भी कीं, जिनमें अपील की कि उन्हें चुना जाए।

चुनाव के ठीक पहले हमने बच्चों को समझाने ले लिए एक डेमो चुनाव का आयोजन किया और फिर तय



तारीख को चुनाव संपन्न हुआ, जिसमें बाकायदा बच्चे लाइन में लगे। उंगली पर स्याही लगवाकर बेलेट पेपर लेकर बूथ में गए। वहां पसंद के चिह्न पर सील लगाकर चुनाव पेटी में अपना मत डाला।

इस चुनाव में बच्चों के अलावा स्कूल में रसोई बनाने वाली महिला, स्कूल की वेन के ड्राइवर से लेकर प्राचार्य तक सभी मतदाता थे। एक मतदाता, एक वोट के बराबरी के नियम का पालन किया गया। मतदान के दिन सभी ने लाइन में लगकर वोट डाले। बाद में आने वाले शिक्षक लाइन में भी पीछे रहे। वोटों की गिनती के समय कुछ वोट रद्द भी हुए।

अब एक नजर चुनाव परिणाम पर। ज्यादातर बच्चे अपने हुनर वाली समिति में ही चुने गए। वह भी तुलनात्मक रूप से बहुत ज्यादा मतों से चुने गए। मसलन अंबर आमतौर हर झगड़े की जगह पहुंचकर उसे सुलझाने का प्रयास करती दिख जाती थी। उसे झगड़ा निपटान समिति के लिए 22 मत मिले जबकि मेडिकल समिति में उसे सिर्फ 7 वोट मिले। और अन्य बच्चों को इस समिति के लिए 1,3 या 5 वोट मिले। इसी तरह 20 वोट पाकर मेडिकल समिति का चुनाव जीती



बीहू को लड़ाई–झगड़ा निपटान समिति के लिए सिर्फ 5 वोट मिले। पार्थ खेल तथा व्यवस्था समितियों में जीता। उसने खेल समिति में रहना तय किया। पार्थ के हट जाने पर व्यवस्था समिति में बाकी दो उम्मीदवारों को मिले वोटों में केवल 2 वोट का अंतर था। हालांकि चुनाव प्रक्रिया में 2 वोट का अंतर भी महत्त्व रखता है। लेकिन हमने यहां उसे नजरअंदाज करके दोनों (भूमिका और नंदन) को संयुक्त रूप से व्यवस्था समिति का प्रमुख बनाया। इससे पता चला कि बच्चों ने वोट डालते समय उम्मीदवार बच्चे की लोकप्रियता के बजाय इस बात का ध्यान रखा था कि कौन, किस भूमिका के लिए उपयुक्त है।

हरेक समिति ने अन्य बच्चों में से, जो चुनाव में खड़े नहीं हुए थे, एक–दो लोगों और एक शिक्षक के साथ मिलकर मंत्रालय बनाया। वे कुछ कुछ काम तो करने लगे, मसलन खेल समिति ने कहा कि उनका कंप्यूटर जल्द सुधरवाया जाए तो वह स्कूल ने तत्परता से किया। सबने मिलकर अपनी–अपनी समिति के कामों की सूची पर काम शुरू कर दिया है।

एक दिन मेडिकल समिति ने सुझाव रखा कि वह मेडिकल कैंप करना चाहती है। बस हमें एक सिरा मिल गया। इस पर चर्चा करने के लिए एक बार फिर स्कूल मीटिंग बुलाई गई। हालांकि इस मीटिंग में समझ आया कि अभी सभी को साफ नहीं है कि उन्हें करना क्या है।

यह प्रक्रिया अभी जारी रहेगी। हम सोचते हैं कि किसी तरह किसी भी एक समिति द्वारा एक आयोजन हो जाए। फिर बच्चे खुद की पहल से ही अपनी समितियों के लिए काम सोच पाएंगे। पहली संभावना है कि मेडिकल समिति की तरफ से कैंप का आयोजन हो। उम्मीद है कि यह बाकी समितियों के लिए अगुआई का काम करेगा। संभव है कि छपाई समिति वॉल पेपर और स्कूल के न्यूजलेटर में भागीदारी करे। पढ़ाई–लिखाई समिति स्कूल लायब्रेरी के उपयोग के लिए कुछ काम करे। खेल समिति, खेल सामग्री के रख–रखाव व उपयोग की चिंता करे। देखते हैं कि ये समितियां स्कूल को कितना और जीवंत बना पाएंगी, पर इतना तो तय है कि वे बच्चों में एक अच्छे नागरिक के कुछ मूल्य अवश्य बो रही हैं।

प्रमोद मैथिल : एकलव्य के होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम से जुड़े रहे। कृष्णमूर्ति फाउंडेशन के सहयाद्री स्कूल, पूना में अध्यापन किया। आनंद निकेतन डेमोक्रेटिक स्कूल, भोपाल के संचालक हैं। संपर्क : आनंद निकेतन डेमोक्रेटिक स्कूल, 189, इंडस एंपायर, बावड़िया कलां, त्रिलंगा, भोपाल। pramod.maithil@gmail.com मो. 09424419871

चंदन यादव : विगत कई वर्षों से एकलव्य भोपाल में कार्यरत हैं। संपर्क : एकलव्य, ई–10,बी.डी.ए. कालोनी,शंकरनगर, शिवाजीनगर, भोपाल। chandansamvad@gmail.com मो. 09425608869